© INNOVATIVE RESEARCH THOUGHTS | Refereed | Peer Reviewed | Indexed
ISSN : 2454 – 308X | Volume : 07 , Issue : 02 | April - June 2021

मैला आँचल में आंचलिकता

पिंकी देवी , शोधार्थी
एम॰ए॰ (हिन्दी), नेट हिसार (हरियाणा)

रेणु का जन्म परिचय :–

रेणु का जन्म 4 मार्च 1921 को बिहार के अररिया जिले में फारबिसंगज के पास औराही हिंगना गाँव में हुआ था। इनकी षिक्षा भारत व नेपाल में हुई थी। प्रारम्भिक षिक्षा गांव में पूरी की और दसवीं की परीक्षा नेपाल में दी। इसके बाद इंटरमीडिएट की पढ़ाई काषी हिन्दू विष्वविद्यालय से की। इन्होंने अपनी रचनाओं में ग्रामीण परिवेष का वर्णन किया है। ये ग्रामीण आँचल के रचनाकार थे। इनके उपन्यासों व कहानियों में ग्रामीण अंचल का बारीकी से वर्णन किया गया है। ''मैला आँचल'' के लिए इन्हें पदम्श्री से सम्मानित किया गया। 11 अप्रैल 1977 को हिन्दी साहित्य के एक महान लेखक रेणु का निधन हो गया।

आँचलिक उपन्यासों का विकास–

हिन्दी साहित्य में आँचलिक शब्द 1952–53 ई॰ के आस–पास जुड़ने लगा था। हिन्दी कहानी के वरिष्ठ कथाकार कमलेष्वर भी मानते है कि ''हिन्दी कथा साहित्य में रेणु का आगमन एक धूमकेतु की तरह हुआ।''[1] प्रेमचन्द के बाद कहानीकारों व उपन्यासकारों को ग्रामीण जीवन पर ही लिखना सही लगा। ग्रामीण जीवन में शहरी जीवन जैसा बनावटीपन न होने के कारण गाँव के प्राकृतिक सौंदर्य और मनुष्यों ने उन्हें अधिक लुभाया था। इसी मनोवृति (विचार) के कारण ही आँचलिक उपन्यासों का जन्म हुआ। मैला आँचल उपन्यास की भूमिका में स्वयं रेणु ने लिखा है, ''यह है मैला आँचल'' एक आँचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँव का प्रतीक मानकर इसे उपन्यास की कथा का क्षेत्र बनाया है। इसमें फूल भी है, शूल भी, गुलाल भी, कीचड़ भी, चंदन भी, सुंदरता भी है, कुरूपता भी– मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया।''[2] यदि वे ऐसा नहीं लिखते तो हो सकता है कि इस उपन्यास को भी ग्रामीण उपन्यास मान लिया जाता। रेणु जी को इस उपन्यास से जितना यष व प्रसिद्धी मिली है इतनी तो उपन्यासकारों को पूरे लेखनकाल में भी नहीं मिली होगी। यह शायद पहला उपन्यास होगा जो हिन्दी साहित्य में नायक विहीन लिखा गया है। रेणु को गाँव से इतना लगाव था कि उन्होंने 'ज्ञानोदय' में एक इन्टरव्यू में कहा था– ''यह कैसे हो सकता है कि बुवाई या कटाई के मौसम में, मैं गाँव में न आऊँ।'' ''मैला आँचल'' उपन्यास में अनेक पात्रों से जुड़ी हुई अनेक घटनाऐं हैं। कथानक की दृष्टि से देखें तो बिखरी हुई घटनाओं से भी लेखक पूरे गाँव की कहानी कह जाता है।

डॉ॰ त्रिभुवन सिंह ने इस उपन्यास के बारे में लिखा है कि ''इसके सभी चित्र कैमरे द्वारा लिए गए स्वतंत्र चित्र है जो अपने में पूर्ण और स्वतंत्र है। यदि उपन्यास में आये सभी विवरणों को सामूहिक रूप से प्रदर्षनी की संज्ञा दे दी जाए तो ''मैला आंचल'' के उपर्युक्त छोटे–छोटे स्वतंत्र चित्रण उसमें प्रदर्षित होने वाले विषेष आकर्षण हैं, जिनका अपना अलग कृत्य होता है, पर इतना तो स्वीकार करना ही

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 07 , Issue : 02 | April - June 2021

पड़ेगा कि जितने भी चित्र उपन्यासकार ने प्रस्तुत किये हैं, उनको स्वतंत्र रंग–रूप और जबान मिली है। मेरीगंज का चित्र नहीं बल्कि गाँव ही कागज के पन्ने पर उतर आया है। इस दृष्टि से 'रेणु जी' का पहला प्रयास है जिसका ऐतिहासिक महत्व है।''[3] ''मैला आंचल'' का कथानक उपन्यास में रेणु ने बिहार के अंचल की धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन की परिस्थितियों का वर्णन किया है। मेरीगंज में कई तरह के लोग रहते हैं। विभिन्न जातियों के लोग अपने अलग–अलग समुदाय बनाकर रहते हैं। समुदायों व लोगों में मन–मुटाव बना रहता है।

आंचलिक उपन्यास के क्षेत्र में रेणु का स्थान–

फणीष्वर नाथ रेणु को मुंषी प्रेमचन्द के बाद हिन्दी उपन्यासों में नई परम्परा की शुरूआत करने वालों के रूप में जाना जाता है। प्रेमचन्द जी ने गाँवों को लेकर अनेक उपन्यास व कहानियाँ लिखी है। फिर भी उन कहानियों व उपन्यासों को पढ़कर यह अहसास नहीं होता है कि हम किसी अंचल विषेष के बारे में पढ़ रहे हैं।'' मैला आंचल के आवरण पृष्ठ पर एक आलोचक की सहमति छपी है। प्रेमचन्द के परम्परा में दषकों बाद यह पहला उपन्यास लिखा गया है।''[4] रेणु ने स्वतंत्रता के बाद बदले परिवेष में सरकार व राजनीतिज्ञों का ध्यान विभिन्न अंचल के पिछड़े क्षेत्रों पर ध्यान देकर उन्हें विकसित करने की सोच कर तो एक जागरूक साहित्यकार का दायित्व निभाया है। उपन्यास लेखन के क्षेत्र में एक नई दिषा प्रदान करने का काम किया। रेणु ने यह उपन्यास एक अंचल को लेकर लिखा है। इसकी भूमिका में उन्होंने कहा है कि इसमें अनेक तरह की विसंगतियाँ तथा अच्छाईयाँ दोनों ही मौजूद है। मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर इस उपन्यास की कथा का क्षेत्र बनाया है। इसमें फूल भी है, शूल भी, धूल भी है, गुलाब भी, कीचड़ भी है, चन्दन भी, सुंदरता भी, कुरूपता भी– मैं किसी से दामन बचाकर निकल नहीं पाया।''[5] रेणु जी ने आँचल की अच्छाईयों व बुराइयों को एक साथ लाने का प्रयास किया है।

''मैला आँचल'' के माध्यम से रेणु जी ने दिखाया है कि किस तरह उच्च वर्ग के लोग गरीबों का शोषण करते हैं। अंग्रेज चले गए परन्तु अब भी उनके द्वारा बनाई गई शासन व्यवस्था ही चल रही है। मेरीगंज को केन्द्र बनाकर रेणु जी ने हमारे जीवन में व्याप्त विषमताओं पर कटाक्ष किया हैं। मेरीगंज के शोषितों का प्रतिनिधित्व 'संथाल' जाति के लोग करते हैं। उनके परिश्रम से मेरीगंज में बंजर भूमि का सुधार करवा लिया गया है। फिर भी उनके पास रहने के लिए एक इंच भी जमीन नहीं है।'' जिस जमीन पर उनके झोपड़े हैं, वह भी उनकी नहीं है। हल में जुता हुआ बैल दिनभर खेत में काम करता है, इसलिए बैलों को भी धरती का हकदार कबूल किया जाए। यह कैसी बात है।''[6] धीरे–धीरे गांव में जागृति आ रही है। सोषलिस्ट पार्टी का कार्यकर्त्ता कालीचरण लोगों को समझाने का प्रयत्न करता है कि जमीन किसकी ? जोतने वालों की। जो जोतेगा, वही बोयेगा, वही काटेगा। पार्टी के कार्यकर्ता कहते हैं– ''जिस तरह सूरज का डूबना एक महान सच है। पूंजीवाद का नाष होना भी उतना ही सच है। चिमनियाँ आग उगलेंगी और उन पर मजदूरों का कब्जा होगा। धरती के सच्चे मालिकों, उठो, क्रान्ति की मषाल लेकर आगे

बढ़ो।''[7] इस उपन्यास में विभिन्न विचारधाराओं के लोग हैं, फिर भी लेखक ने अपने आप को किसी भी वाद के साथ नहीं जोड़ा।

आँचलिक उपन्यासों में यथार्थवाद का होना भी जरूरी है जिससे किसी विषेष अंचल का वास्तवकि चित्र पाठक के सामने प्रस्तुत कर सके। रेणु ने यथार्थ चित्रण करने की पूरी कोषिष की है। मैला आँचल में वास्तविकता दिखाई गई है। ''मैला आंचल'' महज उत्कृष्ट आंचलिक उपन्यास नहीं है। वह भारतीय साहित्य का पहला उपन्यास है जिसने अपने ढंग से झिझकते हुए भारतीय उपन्यासों को नई दिषा दिखाई। जो यथार्थवादी ढाँचे के बिल्कुल भिन्न थी।''[8] इस प्रकार रेणु जी ने भारतीय उपन्यासकारों में अपनी एक खास पहचान बना ली थी। ग्रामीण यथार्थ पर उपन्यास पहले भी लिखे गए थे परन्तु मैला आँचल से नये दृष्टिकोण की शुरूआत हुई।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि रेणु जी ने भारतीय उपन्यासों में आंचलिकता का वर्णन किया है। रेणु जी से पहले भी आंचलिक उपन्यास लिखे गए थे परन्तु सही अर्थो में अंचल विषेष का वर्णन इन्होंने ही किया। ''मैला आंचल'' हिन्दी साहित्य का प्रथम आंचलिक उपन्यास माना जाता है। इस उपन्यास में रेणु जी ने दिखाया है कि आजादी के बाद भी भारत के गांवों का विकास नहीं हुआ है। आज भी अमीर लोग गरीब ग्रामीणों का शोषण करते हैं। उपन्यास के माध्यम से गांवों (अंचल) की ओर राजनीतिकों का ध्यान आकर्षित करवाना है।

गांव के लोग आज भी सीधे व सच्चे हैं। इस उपन्यास में अंचल विषेष का यथार्थ चित्रण किया गया है। अंचल के लोगों की समस्याओं, रहन–सहन, खान–पान आदि का वास्तविक वर्णन किया गया है। हमारे जीवन में व्याप्त विषमताओं पर कटाक्ष किया गया है। मेरीगंज की संथाल जाति के लोगों के परिश्रम का भी वर्णन किया गया है। यह हिन्दी साहित्य का ऐसा पहला उपन्यास है जिसमें एक कथा का वर्णन न करके पूरे मेरीगंज का वर्णन किया गया है। इसमें अंचल विषेष के हर पहलू का वर्णन किया गया है। इस उपन्यास के माध्यम से रेणु जी ने दिखाया है कि गाँवों पर भी उपन्यास लिखे जा सकते हैं। अंचल की अच्छाईयों व बुराइयों दोनों को ही उजागर किया गया है। उपन्यास में ग्रामीण जीवन को बड़ी मार्मिकता व सहजता से दिखाया गया है। यह उपन्यास आंचलिकता की कसौटी पर खरा उतरता है। संक्षेप में हम कह सकते हैं कि ''मैला आंचल'' उपन्यास हिन्दी का पहला आंचलिक उपन्यास है और रेणु जी पहले आंचलिक उपन्यासकार हैं। मैला आंचल उपन्यास की आंचलिकता पर संदेह नहीं है।

संदर्भ सूची :–

1. कमलेश्वर, मेरा हमदम, मेरा दोस्त, पृष्ठ–12
2. रेणु मैला आंचल, भूमिका
3. डा॰ त्रिभुवन सिंह, हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, पृष्ठ– 442
4. परमानन्द श्रीवास्तव : मैला आंचल पुर्नपाठ। पुर्नमूल्यांकन पृष्ठ– 7

ISSN : 2454 – 308X | Volume : 07 , Issue : 02 | April - June 2021

5. रेणु मैला आंचल– भूमिका
6. रेणु मैला आंचल– पृष्ठ 109
7. रेणु मैला आंचल– पृष्ठ 101
8. परमानन्द श्रीवास्तव– मैला आंचल पुर्नपाठ। पुर्नमूल्यांकन पृष्ठ– 42